कहां गए जटायु के वंशज

डॉ. महेश परिमल

किसी को ठिकाने लगाना, यह एक मुहावरा हो सकता है, पर सच तो यह है कि यह बहुत ही मुश्किल काम है। दुनिया में हर रोज़ सैकड़ों मौतें होती हैं, कुछ प्रकृति के नियम के अनुसार, तो कुछ प्रकृति के विरुद्ध जाकर। जिस तरह मौत एक सच्चाई है, उसी तरह लाशों का ठिकाने लगना भी एक शाश्वत सत्य है। मगर लाशों को ठिकाना ऐसे ही नहीं मिल जाता। उन्हें ठिकाने लगाने का काम जटायु के वंशज करते हैं।

आज भी जब कभी हम आसमान पर गिद्ध के झुंड देखते हैं, तो समझ जाते हैं कि कहीं कोई मृतदेह है, जिसका भोज वे सब मिलकर कर रहे हैं। पर अब ऐसा दृश्य कभी-कभी ही दिखाई देता है, क्योंकि आज जटायु के उन वंशजों के हाल बुरे हैं।

हमारी आंखों के सामने ही जटायु के वंशज लुप्त होते जा रहे हैं, हम चाहकर भी कुछ नहीं कर पा रहे हैं। हममें से ही एक डॉक्टर विभु प्रकाश के अथक प्रयासों से इस प्रजाति के अंडों को सहेजकर रखा गया, अब उनमें से बच्चे आ गए हैं और वे खुशी-खुशी बढ़ रहे हैं। ये चूज़े हम सबके लिए आशा की किरण बनकर आए हैं।

किसी गांव में किसी किसान का बैल मर जाए, या किसी की भैंस मर जाए, तो उसे जंगल में ऐसे ही फेंक दिया जाता है। बहुत ही दूरदृष्टि रखने वाले गिद्ध को इसकी जानकारी सबसे पहले मिलती है। मृतदेह को देखने के बाद ये गिद्ध बहुत ऊपर जाकर एक विशेष प्रकार की ध्वनि निकालते हैं, इससे आसपास के ही नहीं, बल्कि बहुत दूर-दूर के गिद्धों को पता चल जाता है कि कहीं कोई मृतदेह है, जिसे ठिकाने लगाना है। बस थोड़ी ही देर में लाश ठिकाने लग जाती है। इससे यह कहा जा सकता है कि प्रकृति ने गिद्ध को पर्यावरण का रक्षक बनाकर हमारे पास भेजा है, जो मृतदेहों को कुछ ही देर में सफाचट कर देते हैं। पर्यावरण के ये रक्षक ही आज हमारे समाज से सफाचट होने लगे हैं।

गिद्धों की संख्या में लगातार कमी आ रही है, पर्यावरणविदों को इसकी जानकारी सबसे पहले तो पारसियों के माध्यम से मिली। पारसियों में यह परम्परा है कि मृतदेह को वे न तो दफनाते हैं और न ही जलाते हैं। वे मृतदेहों को जाली लगे विशेष प्रकार के कुएं में रख देते हैं, जिसे टॉवर ऑफ साइलेंस या दखमा कहा जाता है। इससे होता यह है कि गिद्ध उस मृतदेह को कुछ ही देर में सफाचट कर देते हैं। मुम्बई, सूरत, उदवाड़ा, नवसारी, अहमदाबाद आदि शहरों में इस तरह के स्थान हैं। जब

इन स्थानों में गिद्ध कम आने लगे, तो पारसियों को आशंका हुई कि किसी न किसी वजह से गिद्धों की संख्या में अचानक कमी आ गई है। तब उन्होंने इसकी सूचना पर्यावरणविदों एवं अन्य वैज्ञानिकों को दी।

गिद्धों की संख्या लगातार तेज़ी से कम होने का एक मुख्य कारण यह भी है कि पशुओं को डाइक्लोफिनेक नामक दर्द निवारक दवाई दी जाती है। यह पशुओं में सूजन कम करने के लिए दी जाती है। कई देशों में इसके स्थान पर मेलॉक्सिकेम का इस्तेमाल किया जा रहा है। हमारे देश में भी यह दवा आ गई है, किंतु इसकी कीमत लगभग दुगनी होने के कारण इसका इस्तेमाल नहीं किया जा रहा है।

सरकार ने दो वर्ष पूर्व ही कहा था कि डाइक्लोफिनेक का इस्तेमाल छह माह के अंदर ही बंद कर दिया जाएगा। इसके बाद भी यह दवा हमारे देश में खुले आम बिक रही है। अब देखें कि यह दवा गिद्धों को किस तरह से प्रभावित कर रही है। हमारे गांवों में जब भी किसी जानवर की मौत इलाज के दौरान हो जाती है, तब उसे यूं ही जंगल में फेंक दिया जाता है। गिद्ध इसकी लाश को खाते हैं और अनजाने में ही यह डाइक्लोफिनेक उनके शरीर में प्रवेश कर जाती है। दो दिन बाद ही उन गिद्धों की मौत हो जाती है, क्योंकि उक्त दवा से गिद्धों की किडनी काम करना बंद कर देती है। मेलॉक्सिकेम के इस्तेमाल से गिद्धों को कोई नुकसान नहीं होता।

गिद्धों की संख्या कम होने के कारण आज पशुओं की लाशें सड़कर दुर्गन्ध फैलाती हैं। उनमें से टीबी, एंथ्रेक्स आदि रोग फैलाने वाले विषाणु पैदा होते हैं। ये विषाणु मानव शरीर में घुसकर अन्य कई रोग पैदा करते हैं।

जब हमारे देश में कड़ाके की ठंड पड़ती है, तब कुछ सैलानी पक्षियों का आगमन होता है। इनमें गिद्ध की कुछ प्रजातियां भी शामिल होती हैं। जब इन पक्षियों का यहां से जाना हुआ, तब इंग्लैण्ड की रॉयल सोसायटी फॉर द प्रोटेक्शन ऑफ बड्र्स और बड्र्स लाइफ इंटरनेशनल जैसी संस्थाओं का ध्यान इस ओर गया। 1999 में इन संस्थाओं ने भारत सरकार का ध्यान इस दिशा में दिलाया। लेकिन इसे किसी ने गंभीरता से नहीं लिया। भारत सरकार की इस उदासीनता को देखते हुए ब्रिटिश सरकार ने गिद्धों के संरक्षण के लिए डेढ़ लाख पाउण्ड की सहायता की। इस राशि से हरियाणा के पिंजोर प्रजनन केंद्र में पक्षी विशेषज्ञों ने गिद्धों के संरक्षण और उसकी वंशवृद्धि के लिए काम शुरू किया। लगातार काम के सकारात्मक परिणाम सामने आए। वैज्ञानिकों को विश्वास था कि उनके भगीरथ प्रयासों का असर कुछ वर्षों बाद ही दिखाई देगा, किंतु प्रकृति को मनुष्यों पर दया आ गई। पिछले साल ही एक मादा गिद्ध ने एक अंडा दिया, जिसकी खूब देखभाल की गई। इससे कुछ गिद्धों का जन्म हुआ। गिद्धों की संख्या को बढ़ाने में यह प्रयास एक मील का पत्थर साबित हुआ है।

हमारे आसपास न जाने कितने पक्षी ऐसे हैं, जो प्रकृति की गोद में ही रहकर अपनी वंशवृद्धि करते हैं। गिद्ध भी इसी स्वभाव का पक्षी है। वह आम तौर पर बंदी अवस्था में प्रजनन नहीं करता। प्रजनन केंद्र के प्रभारी डॉ. विभु प्रकाश का इस सम्बंध मे कहना है कि मादा गिद्ध ने अंडे दिए, इसका आशय यही हुआ कि हम उनकी वंशवृद्धि के लिए अनुकूल वातारण केंद्र में ही उपलब्ध करा पाए हैं। इससे यह कहा जा सकता है कि भविष्य में हम गिद्धों की संख्या बढ़ाने में योगदान दे सकते हैं।

डॉ. विभु प्रकाश के प्रयास सफल हों, यह केवल भारत ही नहीं, बल्कि दुनिया भर के पक्षीविदों की इच्छा है। तथास्तु। ***(स्रोत फीचर्स)***

स्रोत सजिल्द

स्रोत के पिछले अंक

उपलब्ध हैं